वार्तालाप नं.484, जलगांव-1 (महाराष्ट्र), दिनांक 07.01.08
Disc.CD No.484, dated 07.01.08 at Jalgaon-1 (Maharashtra)

समय:07.20-08.20

जिज्ञासु- बाबा, 1936 में सेवकराम प्रजापिता द्वारा जो राजस्व अविनाशी रूद्र ज्ञान यज्ञ की स्थापना की जाती है। तो एक अव्यक्त वाणी में बोला है। अव्यक्त वाणी 28.1.77 इस महायज्ञ में पुरानी दुनिया की आहुति पड़ने के बाद यज्ञ समाप्त हो जाता है। तो इस रूद्र ज्ञान यज्ञ को अविनाशी क्यों बोला हुआ है? क्योंकि 100 साल के बाद तो वो खतम हो जाता है।

बाबा- पुरानी दुनियाँ की आहुति होती है उससे पहले नई दुनियाँ, नया अंकुर फूट जाता है कि नहीं? इसीलिए अविनाशी कहा। पुरानी दुनिया पहले खतम कर देते हैं कि पहले नई दुनिया की स्थापना हो जाती है? पहले नई दुनिया की स्थापना हो जाती है। फिर पुरानी 500 करोड़ की दुनिया खलास कर देते हैं। इसीलिए अविनाशी है इसका विनाश टोटल नहीं हो सकता।

Time: 07.20-08.20

Student: Baba, the *Rajasva Avinashi Rudra Gyan Yagya*[1] which was established through Sevakram, Prajapita in 1936. So, it has been said in an *Avyakta Vani*. In the *Avyakta Vani* dated 28.1.77 it has been said that when the offering of the old world is made in this *mahayagya*, the *yagya* ends. So, why is this *Rudra Gyan Yagya* called imperishable when it ends after 100 (years)?

Baba: Before the offering of the old world is made (in the *mahayagya*), does the sprout (*ankur*) of the new world emerge or not? This is why it has been called imperishable. Does he end the old world first or is the new world established first? First the new world is established. Then he destroys the old world of 500 crores [5 billion]. This is why it is imperishable. It cannot be totally destroyed.

समय: 8.21-10.00

जिज्ञासु- बाबा, पृथ्वी का टुकड़ा टूट के चंद्रमा बन गया। और वो प्रशांत महासागर बन गया फिर विनाश के बाद फिर वो चंद्रमा और पृथ्वी एक हो जाएगा क्या?

बाबा- अर्धविनाश होता है। तो अर्ध विनाश में वो टुकड़ा अलग हो जाता है और पृथ्वी की धुरी चेंज हो जाती है। चेंज हो जाने से रात और दिन दोनों चालू हो जाता है। उससे पहले देवताओं की रात होती ही नहीं थी। रात को उन्हें बत्ती, बिजली और बिजली के कारखाने बनाने की दरकार नहीं थी।

[1] the imperishable yagya of knowledge of Rudra for acquiring self sovereignty (rajsva)

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Time: 8.21-10.00
Student: Baba, a piece of Earth broke away and became Moon. And it gave rise to the Pacific Ocean [on the Earth]. Then after destruction, will that Moon merge with Earth?
Baba: The semi-destruction takes place (at the end of the Silver Age). So, that piece (of Earth) separates at the time of semi-destruction and the Earth's axis changes. When the change takes place, both night and day start. Before that deities did not have nights at all. There was no need for them to have lights, electricity and power plants.

जिज्ञासु- विनाश के बाद वो जो चंद्रमा है वो अलग ही रहेगा कि एक हो जाएगा?
बाबा- अरे ये सारे ग्रह जो हैं वो विनाश में टकराते हैं। वो जड़ ग्रह हैं। अभी जो चैतन्य बीजरूप आत्मायें हैं और जो आधारमूर्त आत्मायें हैं सारी सृष्टि की वो टकराने के कगार पर दिखाई पड़ रही हैं कि नहीं पड़ रही हैं? दिखाई पड़ रही हैं। तो वो तो बाद में टकरायेंगे। पहले कौन टकराते हैं? पहले तो चैतन्य टकराते हैं। परिवर्तन चैतन्य करेगा या जड़ अपने आप परिवर्तन हो जाएगा। वो नव ग्रह, चांद, सितारे वो जड़ हैं। और ये हैं धरती के चैतन्य सितारे। इनके ऊपर सारा मदार है सृष्टि के परिवर्तन का।
Student: After destruction, will the Moon remain separate or will it merge (with Earth)?
Baba: Arey! All these planets clash at the time of destruction. Those are non-living planets. Now the living seed-form souls and the root-like souls of the entire world: do they appear to be on the verge of clashing or not? They do appear to be so. They will clash later on. Who will clash first? First the living ones clash. Will the living one bring about transformation or will the non-living [things] transform on their own? Those nine planets, Moon, stars are non-living. And these are the living stars of Earth. The world transformation depends entirely on them.

समय:10.50-13.40
जिज्ञासु- बाबा, भक्तिमार्ग में कोई मरते हैं हद में बोलते हैं कि जाके वैकुण्ठ में जन्म लेना। तो वैकुण्ठ में जन्म किधर होता है?
बाबा- वो तो बात बोल रहे हैं ना, बाबा खुद ही मुरली में बोल रहे हैं। तुमने कोई नई बात थोड़े ही बोली। बाबा खुद ही बोलते हैं नर्क में मरेगा तो कहाँ जन्म लेगा? नर्क में ही जन्म लेगा। स्वर्ग है कहाँ जो स्वर्ग में जन्म लेगा? अगर स्वर्ग में मरेगा तो स्वर्ग में ही जन्म लेगा। पतित दुनियाँ में सब पतित होते हैं और पावन दुनियाँ सब पावन होते हैं। तो पतित दुनियाँ में जो मर रहे हैं, लोग कह देते हैं स्वर्ग पधारा। तो कह देने से कोई स्वर्ग पधारा हो जाता है?
Time: 10.50-13.40
Student: Baba, if anyone dies in the path of *bhakti* (devotion), it is said in a limited sense go and take birth in heaven (*vaikunth*). So, where does one take birth in heaven?
Baba: That is indeed being said, Baba is Himself saying this in the Murlis; you have not said anything new; Baba Himself says: if someone dies in hell, where will he take birth? He will take birth in hell only. Where is heaven that he will be born in heaven? If someone dies in

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

heaven, he will be born in heaven. In the sinful world everyone is sinful and in the pure world everyone is pure. So, as regards those who are dying in the sinful world, people say that he left for heaven. So, does anyone go to heaven just by saying so?

ये तो भक्तिमार्ग की रसम रिवाज है 'स्वर्ग पधारा'। है कहाँ ही यादगार? ये संगमयुग में जब बाप आते हैं तब हमको सिखाते हैं जीतेजी मर जाओ। क्या? आपघात करके मरने की दरकार नहीं है, स्युसाईड करने की दरकार नहीं है। क्या सिखाते हैं? जीतेजी इस देहभान से मर जाओ। जब जीतेजी देहभान से मरेंगे तो इस शरीर रहते हुए भी अपने को सुख में अनुभव करेंगे। शांति में अनुभव करेंगे। दुख का अनुभव नहीं होगा। जो आत्मिक स्थिति की पक्की प्रैक्टिस वाले होंगे। देहभान का नाम निशान नहीं हो। नहीं तो क्या होता है? कोई थोड़ी सी मुँह पर बुराई कर दे चेहरा लटक जाता है। इसको देहभान कहें कि आत्माभिमानी कहें? जो आत्माभिमानी होगा वो तो समझेगा कि अरे ये ग्लानि, ये गाली मेरी आत्मा को चिपक गई क्या? जो देहअभिमानी होते हैं उनको गाली लगती है।

Saying that someone has left for heaven is the tradition of the path of *bhakti*. It is a memorial of which time? When the Father comes in the Confluence Age, He teaches us to die while being alive. What? There is no need to die by suicide; there is no need to commit *suicide*; there is no need to commit suicide. What does He teach? Die from this body consciousness while being alive. When you die from body consciousness while being alive, then you will feel joyful, you will feel peaceful even while being in this body. You will not experience sorrow. Those who practice firm soul consciousness, those who do not have any name or trace of body consciousness [will experience this]. Otherwise, what happens? If someone scolds you on the face, you become sad. Should it be called body consciousness or soul consciousness? The one who is soul conscious will feel: Arey! Did this defamation, this abuse stick to my soul? Abuses stick to the ones who are body conscious.

नहीं तो सबसे ज्यादा ग्लानि इस संसार में और सबसे ज्यादा गालियाँ किसको मिलती हैं? भगवान को, बाप को। परंतु उसके ऊपर असर क्यों नहीं होता? क्योंकि वो सदैव आत्माभिमानी है। सदैव बिंदु है। भल शरीर में आता है। कानों से सुनता है। ग्लानि भी सुनता है। आँखों से अखबार भी पढ़ता है। ग्लानि सुनता है। कलंक इतने लगाए जाते हैं कि दुनियाँ कलंकीधर अवतार का नाम दे देती है। फिर भी वो अपना काम चुप-चाप करता रहता है, कोई असर नहीं। यहाँ तक की दुनियाँ वालों बात छोड़ो। बच्चे भी आज निश्चय करते हैं, लिखकरके देते हैं यज्ञ के आदि में भी खून से लिखकरके देते थे। अभी स्टाम्प पेपर पर लिखकरके देते हैं। कि हमें भगवान बाप मिल गया प्रैक्टिकल में साकार में, बाप आया हुआ है। आज लिखकरके देते हैं। और कल कहते हैं अरे हम तो ऐसे ही बरगला लिए गए थे। ये बाप-आप कुछ नहीं है। ये कोई भगवान होता है? ये तो शैतान है। हम तो ठग लिए गए। या तो हम तो देखने गए थे यहाँ क्या होता है। हमसे लिखवाया गया तो लिख दिया।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Otherwise, who faces the maximum defamation and maximum abuses in this world? God, the Father. But why is He not affected? It is because He is always soul conscious. He is always a point. Although He comes in a body, He listens through the ears, He also listens to defamation, He also reads the newspapers through the eyes, He listens to defamation; so many charges are leveled against Him that the world names him as an incarnation in the form of *Kalankidhar* (the one who takes on defamation), yet He continues to perform His task silently. He is not affected. Leave the people of the world alone. Even the children develop faith one day; they give it in writing one day…; they used to write (the letter of faith) with blood in the beginning of the *yagya*. Now they write on a stamp paper, 'we have found God; the Father has come in practical in corporeal form'. They give it in writing one day and the next day they say: Arey, we were misled. He is not the Father; Is God like this? He is indeed a demon. We were deceived. Or [they may say:] 'we had gone just to see what happens there. We were made to write; so we wrote'.

समय:13.44 -16.55

जिज्ञासु- सतयुग में जो बच्चे जन्म लेंगे। जैसे अभी कलियुग में माँ की कोख में 9 महीने बच्चे रहते हैं। और फिर सतयुग में ऐसा ही होता है क्या?

बाबा- अरे! तुम क्या समझे कि जैसे ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनियाँ में मुख से ब्राह्मण पैदा होते हैं तो वहाँ भी मुख से ही बच्चे पैदा करेंगे? उवा ... करेंगे और देवता निकल पड़ेंगे? अरे भाई, ब्राह्मणों की जो गति है वो अलग है, निराली है। ब्राह्मण जो हैं वो जन्म लेने के बाद भी नीचे से ऊपर उल्टी सीढ़ी चढ़ते हैं। चढ़ते हैं कि नहीं चढ़ते हैं? ऊपर चढ़ते हैं, ऊँची स्टेज में जाते हैं। और जो देवता पैदा होंगे, भले पहले जन्म में ही पैदा होंगे, या जो भी देवतायें बाद में पैदा होंगे वो उत्तरोत्तर नीचे गिरते जावेंगे या ऊपर उठेंगे? तो ये अंतर है मुख की पैदाईश में। और नीचे की पैदाईश में।

Time: 13.44-16.55

Student: The children who will be born in the Golden Age; for example, a fetus remains in the mother's womb for 9 months in the Iron Age and then does it happen like this in the Golden Age?

Baba: Arey! Did you think that just as Brahmins are born through the mouth in the world of Confluence Age Brahmins; the children will be born through the mouth there as well? They will utter '*uva*' and deities will come out? Arey, brother, the dynamics of Brahmins is different; it is unique. Brahmins after being born, climb the ladder in an opposite direction from down to up. Do they climb or not? They climb up; they go to a higher stage. And the deities who will be born, although they are [the ones] born in the first birth or all the deities who will be born later on, will they continue to experience downfall or will they rise above? So, this is the difference between the birth through mouth and the birth of a lower stage.

देवतायें भी कोई मुख से पैदा नहीं होते हैं। क्या? हाँ मुख के प्यार से जन्म होता है । इन्द्रियाँ हैं ना। इन्द्रियों से ही प्यार होता है। इन्द्रियों में कोई इन्द्रियाँ श्रेष्ठाचारी, श्रेष्ठ इन्द्रियाँ हैं, ऊपर की इन्द्रियाँ हैं। और कोई इन्द्रियाँ भ्रष्टाचारी। तो भ्रष्ट आचरण करने वाली

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

घू-मूत वाली इन्द्रियों से देवताओं का जन्म नहीं होता लेकिन श्रेष्ठ इन्द्रियों से जन्म होता है। श्रेष्ठ इन्द्रियों के प्यार से जन्म होता है। और वो प्यार व्यभिचारी प्यार नहीं होता है कि राधा की आँख और देवताओं में डूबती रहे और कृष्ण की आँख और देवियों में भी डूबती रहे। ऐसा व्यभिचार आँखों का वहाँ होता नहीं है। बाकी बच्चे कोई मुख से पैदा नहीं होगें हैं वहाँ। बच्चे तो पेट से ही पैदा होंगे। क्या पूछना चाहते हैं?

Deities also, are not born through the mouth. What? Yes, they are born through facial love. There are organs, aren't there? Love takes place only through the organs. Among the organs some are righteous organs, elevated organs, organs of a higher stage. And some are unrighteous organs. So, deities are not born through the organs that perform unrighteous acts, the organs that are involved [passing] fasces and urine, but through righteous organs. They are born through the love of the righteous organs. And that love is not adulterous love that Radha exchanges glances with other deities *(devtas)* and Krishna exchanges glances with other deities *(devis)*. Such adulteration of vision does not take place over there. As for the rest, the children will not be born through the mouth there. Children will be born through the womb only. What do you want to ask?

जिज्ञासु- जैसे नौ महीने बच्चे होते हैं आजकल तो ऐसे ही वहाँ भी होगा क्या?

बाबा- हाँ, हाँ। वहाँ भी बच्चों का टाईम होगा। वहाँ भी बच्चों का गर्भ धारण होगा।

जिज्ञासु- जैसे अभी नव महीने रहते हैं।

बाबा- हाँ। यहाँ स्थूल खून है और वहाँ.....

जिज्ञासु- संकल्पों का खून काम करेगा।

बाबा- नहीं संकल्पों की पैदाईश होती है वो तो संगमयुग की पैदाईश है। जो राधा-कृष्ण जिन बच्चों को पैदा करेंगे। राधा-कृष्ण जो पैदा करेंगे वो वायब्रेशन की पैदाईश नहीं होगी। क्या? राधा-कृष्ण बड़े होकर जिन बच्चों को पैदा करेंगे वो वायब्रेशन की पैदाईश नहीं होगी। वो मुख की इन्द्रियों की पैदाईश होगी। और संगमयुग में जो राधा-कृष्ण जैसे बच्चों को जन्म देने वाले होंगे। वो वायब्रेशन की पैदाईश होगी।

Student: Just as nowadays faeces remain in the womb for nine months; will it happen like this there as well?

Baba: Yes, yes. There will be a time period for children there as well. Even there children will have to stay in the womb.

Student: Just as they stay nine months now.

Baba: Yes. Here it is physical blood and there....

Student: The blood of thoughts will work.

Baba: No. The reproduction through thoughts is a reproduction of the Confluence Age. The children who will be born from Radha and Krishna… The reproduction by Radha and Krishna will not be a reproduction through vibrations. What? When Radha and Krishna grow up and give birth to children; that will not be a reproduction through vibrations. That will be the reproduction through the organs of the face. And those who give birth to children like Radha and Krishna in the Confluence Age… that will be reproduction through vibrations.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

समय:16.57-25.20

जिज्ञासु- बाबा, शंकर के तन में शिव मुरली का क्लेरिफिकेशन करते हैं। ब्रह्मा तो सिर्फ मुरली पढ़ते हैं और राम वाली आत्मा अपनी याद में बैठती है। तो 2018 में बाबा ने ही मुरली में क्लियर किया है कि कृष्ण का स्थूल रूप से जन्म हो जावेगा।

बाबा- 2018 में संगमयुग होगा या सतयुग होगा?

जिज्ञासु- संगमयुग।

Time: 16.57-25.20

Student: Baba, Shiv gives clarification through the body of Shankar. Brahma just reads the Murli and the soul of Ram [just] sits in remembrance. So, Baba himself has made it clear in a Murli that Krishna will be born physically in 2018.

Baba: Will it be Confluence Age in 2018 or will it be the Golden Age?

Student: The Confluence Age.

बाबा- तो संगम में संगमयुगी कृष्ण का जन्म होगा और सतयुग में सतयुगी कृष्ण का जन्म होगा। जो सतयुग होगा उसमें पांच तत्व सतोप्रधान बनेंगे दुनियाँ के और शरीरों के पांच तत्व सतोप्रधान बनेंगे या इस संगमयुगी दुनियाँ में जहाँ 500 करोड़ तमोप्रधान मनुष्य भरे पड़े हैं और वायब्रेशन दुनियाँ का अति तमोप्रधान बनता जा रहा है। और ऊपर से नई आत्मायें तमोप्रधान उतरती जा रही हैं। तो यहाँ पाँच तत्व जो शरीर के हैं वो सतोप्रधान बन सकेंगे।(किसी ने कहा- बाबा ऐसा क्यों बोलते हैं मुरली में....) बाबा ने तो मुरली में स्पष्ट बता दिया है। बाबा ने क्लियर कर दिया शरीर सड़ते जावेंगे और आत्मा पावरफुल होती जावेगी।

Baba: So, the Confluence Age Krishna will be born in the Confluence Age and the Golden Age Krishna will be born in the Golden Age. Will the five elements of the world and the five elements of the body become *satopradhan*[2] in the Golden Age or [will they become so] in this Confluence Age world, which is full of (500 crore) 5 billion *tamopradhan*[3] human beings and [where] the vibrations of the world is becoming extremely *tamopradhan*. And new *tamopradhan* souls continue to descend from above. So, will the five elements of the body be able to become pure here? (Someone said: why does Baba say so in the murli…) Baba has clearly said in the Murli. Baba has made it clear that the body will go on decaying and the soul will go on becoming powerful.

जिज्ञासु- तो बाबा ये क्यों बोलते हैं मुरली में कि नर्क के बीच में स्वर्ग का सैम्पल तैयार होगा।

बाबा- नर्क के बीच में स्वर्ग का मतलब ये है जो अभी बताया कि नर्क की दुनियाँ में सब

[2] consisting mainly in the quality of goodness and purity

[3] stage dominated by darkness or ignorance

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

नार्किय होते हैं और स्वर्ग की दुनियाँ में सब देवतायें होते हैं। पतित दुनियाँ में सब पतित होंगे और पावन दुनियाँ में सब पावन होंगे। अब सवाल है कि पतित दुनियाँ में सब पतित हैं तो आखिर देवतायें आयेंगे कहाँ से?

जिज्ञासु- वो ही तो बात है।

बाबा- ये बात है। तो उसका काट भी तो है। जो भी पुरूषार्थी आत्मायें हैं वो पहले शरीर से सतोप्रधान बनेंगी या मन-बुद्धि के जो वायब्रेशन चारों तरफ घूमते हैं उनसे सात्विक बनेंगी? वायब्रेशन ज्यादा पावरफुल होते हैं या हाथ-पाँव की इन्द्रियाँ ज्यादा पावरफुल होती हैं?

जिज्ञासु- वायब्रेशन।

Student: So, why does Baba say in the Murli that a sample of heaven will be prepared in the midst of hell?

Baba: The meaning of 'heaven in the midst of hell' is the same as was said just now that everyone is hellish in the hellish world and everyone is a deity in the heavenly world. Everyone will be sinful in the sinful world and everyone will be pure in the pure world. Now the question is if everyone is sinful in the sinful world, then, ultimately where will the deities come from.

Student: This is the question.

Baba: This is the question. So, there is an answer for this too. Will all *purusharthi* (those who make spiritual effort) souls become *satopradhan* first through the body or will they become pure (*satvik*) through the vibrations of the mind and intellect which spread everywhere? Are the vibrations more powerful or are the organs like hands and legs more powerful?

Student: Vibrations.

बाबा- तो वायब्रेशन इतने पावरफुल हो जायेंगे योगियों के कि उस वायब्रेशन में जो भी आवेगा टच में वो पारसनाथ के मिसाल चेंज हो जावेगा। जो पारसनाथ का गायन है। क्या? पारस पत्थर जैसे ही कनेक्शन में आता है लोहा, क्या बन जाता है? सोना बन जाता है। बाकी कोई ऐसा कोई पत्थर होता नहीं है। ये तो हम पत्थरबुद्धि मनुष्यों की बात है। जिनको भगवान आकरके ज्ञान सुना रहा है और हमको प्रैक्टिस करा रहा है कि अपन को बिन्दु आत्मा समझो और साकार में आए हुए बाप जो निराकार है जो वायब्रेशन ज्ञान के फैला रहा है उन वायब्रेशन में अपने को जीवित रखो। दुनियावी प्रभाव में मत आओ। दुनियावी वायब्रेशन में मत जाओ। संकल्प करो तो सेवा के संकल्प करो। दुनियाँ का संकल्प करो तो नई दुनियाँ का संकल्प करो। देखना है तो आत्माओं को देखो। कैसी भी आत्मा है वर्तमान में भल तमोप्रधान है, गाली दे रही है, ग्लानी कर रही है। लेकिन उसके सात्विक स्वरूप को देखो। ये क्या थी? तो हमारे वायब्रेशन कैसे बन जावेंगे? सतोप्रधान वायब्रेशन बन जावेंगे।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Baba: So, the vibrations of the yogis will become so powerful that whoever comes in touch with those vibrations will change just like the example of *Paarasnath*[4]; [just like] it is famous about *Paarasnath*…. What? …as soon as iron comes in contact with *paaras*, what does it become? It becomes gold. As for the rest, there is no such stone. It is about us human beings with a stone-like intellect to whom God narrates knowledge when He comes and He is making us practice this: to consider ourselves souls and keep ourselves alive in the vibrations of knowledge that the incorporeal Father who has come in corporeal form is spreading. [He says:] Do not come under the worldly influence. Do not go into worldly vibrations. If you create thoughts create thoughts of service. If you think of world, think of the new world. If you want to see, see souls. It does not matter how a soul is, it may be *tamopradhan* in the present time, it may be hurling abuses, it may be defaming you, but see its pure (*satvik*) form. What was it? Then, how will our vibrations become? They will become *satopradhan*.

जिसके वायब्रेशन ही सतोप्रधान होंगे। मान लो! नारायण के पहले होंगे। तो नारायण के सामने कोई तमोप्रधान सामने आवेगा? जो नर से नारायण जैसी स्टेज धारण करते जावेंगे। उनके सामने कोई भी दुख देने वाला आ नहीं सकता। ये आत्मा का प्रभाव होगा। तो ऐसे वायब्रेशन वाली आत्मायें जब संगठित हो जायेंगी। समझो माऊन्ट आबू में हों या जमुना के कंठे पर हों। तो पुरानी दुनियाँ के बीच नई दुनियाँ का नज़ारा देखने में आवेगा या नहीं आवेगा? आवेगा।

The one whose vibrations are pure; suppose, the vibrations of Narayan will become pure first; so will a *tamopradhan* person come in front of Narayan? None who give sorrow can come in front of all those people (*nar*) who go on achieving the stage of Narayan. This will be the effect of the soul. So, when souls with such vibrations gather , suppose at Mt. Abu or on the banks of Yamuna, will the scene of new world amidst the old world be visible or not? It will be.

अभी भी ढेर सारे मिनी मधुबन खुले हुए हैं। क्या समझते हैं सबका वायब्रेशन एक जैसा होगा? एक जैसा वायब्रेशन नहीं हो सकता। जो बोला है स्टुडेन्ट को अगर देखना हो तो किसको देख लो? क्लास में स्टुडेन्ट बैठे हैं और स्टुडेन्ट कैसे हैं तो किसको देखो? टीचर को देखो। तो ऐसे ही जो मिनीमधुबनों में जो इन्चार्ज बहने बैठी हुई हैं उनके देखने से ही पता लग जावेगा कि मिनीमधुबन में जो स्टुडेन्ट हैं, पढ़ाई पढ़ने वाले भाँती हैं परिवार के वो कैसे हैं? तो एक जैसे नहीं हैं।

Even now, numerous *Minimadhubans* have opened. Do you think that the vibrations of all of them are alike? The vibrations cannot be alike. It has been said that if you want to see the student, who should you see? Students are sitting in the class and [if you want to know] what are the students like, who should you see? You should see the teacher. So, similarly, by looking at the sister in charge [of the center] sitting in the *minimadhubans,* you can know

[4] one of the titles for God; here Baba refers to the mythical stone, *paras,* which is believed to change iron to gold by mere touch

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

what the students of the *minimadhubans*, the members of the family who are studying are like. So, they are not alike.

ऐसे नहीं है कि नई दुनियाँ तैयार नहीं हो रही है। नई दुनियाँ तैयार हो रही है, आत्मायें पावरफुल तैयार हो रही हैं। एक के डायरेक्शन पर चलने वाली तैयार हो रही हैं। हिम्मत उल्लास जिनका बढ़ा हुआ है वो तैयार हो रहे हैं। हिम्मते बच्चे मददे बाप। ऐसी आत्मायें तैयार हो रहीं हैं लेकिन ये नहीं है कि उनके शरीर कंचन बन जावेंगे। क्या? शरीर तो...। पाँच तत्व दुनियाँ के बिगड़ रहे हैं या सुधर रहे हैं? पाँच तत्व पहले सुधरेंगे या आत्मायें पहले सुधरेंगी? भगवान बाप आत्माओं को पढ़ाई पढ़ाने आया है या पाँच तत्वों को पढ़ाई पढ़ा रहा है?

It is not that the new world is not getting ready. The new world is getting ready. Powerful souls are getting ready. Souls which follow the directions of one are getting ready. Souls whose courage and enthusiasm is high are getting ready. If the children show courage, the Father is there to help. Such souls are getting ready. But it is not that their bodies will become *kanchan*[5]. What? The bodies..... Are the five elements of the world degrading or improving? Will the five elements improve first or will the souls improve first? Has God the Father come to teach the souls or is He teaching the five elements?

पाँच तत्व तो जड़ हैं ये शरीर भी जड़ है। ये शरीर में योगबल की इतनी ताकत भर जाए कि आत्मा अलग और देह अलग दिखाई दे। जब ऐसी स्टेज बन जावेगी तो ये मोबाईल आदि की दरकार नहीं रहेगी। दूर बैठे ही कोई भी आत्मा से हम संपर्क साध लेंगे। बात कर सकेंगे उसके भाव को समझ लेंगे। और यही संगठन नई दुनियाँ में पहुँचेगा। इसीलिए वहाँ भाषा नहीं होती है। क्या? इशारे की भाषा होती है। यूँ किया और बात समझ गए। अभी भी ऐसा होता है बहुतों को हम बात कहना चाहते हैं सामने वाला अपने आप समझ लेता है। क्यों होता है ऐसे? संस्कार मिल रहे हैं। तो ऐसे नहीं है कि 2018 में कृष्ण नहीं होगा। कृष्ण होगा साकार शरीर से होगा। लेकिन पाँच तत्व शरीर के सतोप्रधान नहीं बन जावेंगे। हाँ! जो सूक्ष्म शरीर है। वो.....

<u>जिज्ञासु-</u> खतम हो जाएगा।

The five elements are non-living. This body is also non-living. This body should have such power of yoga that the soul should appear separate and the body should appear separate. When you achieve such stage, there will not be any need for the mobiles, etc. We will be able to contact any soul while sitting far away. We will be able to talk and understand his intentions. And the same gathering will reach the new world. This is why there is no language there. What? There is a language of gestures. You will just make a sign like this and they will understand it. Even now it happens with many people; we want to say something and the person standing in front of us understands automatically. Why does it happen like this? The

[5] rejuvenated; gold-like

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

sanskars match. So, it is not that there will be no Krishna in 2018. There will be Krishna and he will be present in a corporeal body. But the five elements of the body will not become *satopradhan*. Yes, the subtle bodies. They.....
Student: …will end.

बाबा- नहीं। जो सूक्ष्म शरीर है वो संसार में बढ़ता जावेगा। क्योंकि अकाले मौत बढ़ती जावेगी। कृष्ण वाली आत्मा तो बीजरूप स्टेज में आ गई। वो शरीर से कर्म करने वाली है। (किसी ने कुछ कहा) वो फरिश्ता होगी, जो कृष्ण वाली आत्मा होगी वो फरिश्ताई स्टेज में होगी या स्थूल शरीर को, देह को धारण करने वाली देहधारी होगी? फरिश्ताई स्टेज में होगी। जो भाई अभी बोल रहे थे उनको समझ में आ गई बात?

जिज्ञासु- हाँ जी।
Baba: No. The subtle bodies will go on increasing in the world because untimely deaths will go on increasing. The soul of Krishna achieved the seed-form stage. It performs actions through the body. (Someone said something.) Will the soul of Krishna be an angel, will it be in an angelic stage or will it be a bodily being with a physical body? It will be in an angelic stage. Did the brother who was speaking just now understand the topic?
Student: Yes.

समय: 25.58-27.50

जिज्ञासु- बाबा, 16.1.78 के अव्यक्त वाणी का ये प्वाईन्ट है। इसमें बोला है 'दस वर्ष समाप्त हो गए उसका रिज़ल्ट क्या। वैसे भी दस वर्ष कम नहीं हैं। साकार के 42-43 वर्ष और अव्यक्त के दस वर्ष तो 50 से ऊपर चले गए ना।' तो 78 में तो 40 साल ही हुए थे।

बाबा- वही तो बताया 42 वर्ष।

जिज्ञासु- बाबा, यहाँ बोला 50 से ऊपर चले गए।

बाबा- सन् 36 में साकार था या नहीं था? साकार था वो ही साकार अभी भी है 78 में। तो कितने साल हुए?

जिज्ञासु- 42।
Time: 25.58-27.50
Student: Baba, it is a point in the Avyakta Vani dated 16.1.78. It has been said, 'ten years have passed. What was its result? As such, ten years is not a small period. 42-43 years of the corporeal and ten years of the *avykt* ; so, it is more than 50 years, isn't it?' But, in (19)78 only 40 years (of yagya) had been completed.
Baba: That itself has been mentioned as 42 years.
Student: Baba, here it is mentioned that more than 50 years have passed.
Baba: Was the corporeal (medium of God) present in (19)36 or not? The corporeal one was present; the same corporeal one is present even now in (19)78. So, how many years have passed?
Student: 42.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

बाबा- 42 साल साकार के हो गए। और ब्रह्मा बाबा ने शरीर छोड़ दिया। 69 में शरीर छोड़ दिया 18 जनवरी को। तब से लेकर के 78 तक कितने साल हुए? 10 साल। वो अव्यक्त में हो गया। ऐसे नहीं कि ब्रह्मा की सोल पहले अव्यक्त बनती है। पहले अम्मा की सोल पहले अव्यक्त बनेगी कि बाप पहले अव्यक्त बनता है?

जिज्ञासु- बाप पहले बनता है।

बाबा- हाँ जी। तो 69 में जो बाप का पार्ट बजाने वाली आत्मा है वो आते ही अव्यक्त स्टेज धारण करने लग पड़ती है। आने मात्र से ही। जिसका फाऊन्डेशन अच्छा होगा उसकी सारी बिल्डिंग अच्छी बन जाएगी। फाऊन्डेशन में जो ज्ञान की बातों पर ध्यान नहीं देते, बीजरूप स्टेज में टिकने का अभ्यास नहीं करते हैं उनका सारा ब्राह्मण जीवन अलबेलेपन में जाता है। 70-70 साल के ब्राह्मण पड़े हुए हैं यज्ञ में।

Baba: 42 years of corporeal. And Brahma Baba left his body. He left his body on 18th January, 1969. From that time to (19)78, how many years passed? 10 years. That was of *avyakt* (part). It is not that the soul of Brahma becomes *avyakt* first. Will the soul of the mother become *avyakt* first or will the Father become *avyakt* first?

Student: The Father becomes first.

Baba: Yes. So, the soul which plays the part of Father starts assuming an *avyakt* stage as soon as it comes in (19)69. As soon as he comes. If the foundation is good, the entire building will be good. Those who do not pay attention to the topic of knowledge at the time of foundation, those who do not practice becoming constant in a seed-form stage, their entire Brahmin life is spent in carelessness. There are Brahmins who have been in the yagya for 70 years.

समय: 27.53-40.42

जिज्ञासु- बाबा, ताज महल जो है तेजो महल था। उसको शाहजहां ने कब्रिस्तान बना दिया। ये ब्रॉड ड्रामा में हुआ तो सूक्ष्म में अभी संगमयुग में कैसे?

बाबा- शाहजहां वाली आत्मा कौन होती है? ये पता है?

(किसीने कुछ कहा।)

बाबा- हाँ। नाम ही है शाहजहां। सारे जहान का शाह। राम वाली आत्मा वो आत्मा है जो रूहानी बाप से भिन्न है। रूहानी बाप कौन है? बिंदु-2 आत्माओं का बाप शिव ज्योतिबिंदु। वो जो देता है वर्सा, वो कितने जन्म का वर्सा देता है? 21 जन्म का वर्सा राजाई का देता है। वो रूहानी बाप का वर्सा है। बेहद के रूहानी बाप का। तो बेहद का कोई जिस्मानी बाप भी है या नहीं है? है। तो जो बेहद का जिस्मानी बाप होगा। वो भी कुछ देता है या कुछ भी नहीं देता है? उसका, जिस्मानी बाप का वर्सा भी जिस्मानी होगा।

Time: 27.53-40.42

Student: Baba, Taj Mahal was Tejo Mahal. (Mughal Emperor) Shah Jahan converted it into a graveyard. This happened in the broad drama; so, how does it happen now in a subtle form in the Confluence Age?

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Baba: Who is the soul of Shahjahan? Do you know?
(Someone said something)
Baba: Yes. The name itself is Shah Jahan. *Shah* (Emperor) of the entire *Jahaan* (world). The soul of Ram is a soul different from the spiritual Father. Who is the spiritual Father? The Father of the point-like souls, i.e. point of light Shiv. The inheritance that He gives is an inheritance for how many births? He gives the inheritance of the kingship for 21 births. That is the inheritance of a spiritual Father, of the unlimited spiritual Father. So, is there any physical father in an unlimited sense or not? There is. So, does the physical father in an unlimited sense give anything or not? The inheritance of the physical father will also be physical.

जिस्मानी दुनियाँ की शुरूआत ही होती है द्वापरयुग से। द्वापर युग से जितनी भी राजाईयाँ हुई हैं। सब धर्मों में। हर धर्म में राजाई हुई है या नहीं हुई है? (किसी ने कहा-हुई है।) जो भी राजाईयाँ हुई हैं, उन राजाईयों का बीजारोपण करने वाला बाप कौन? मैं तुम्हारी राजधानी स्थापन करता हूँ। बोलने वाला एक है या दो हैं? है तो एक। वो 21 जन्म की राजाई स्थापन करता है। और जो दूसरा है वो मनुष्य सृष्टि का बाप है। इसीलिए हर धर्म का धर्मपिता जो आता है। वो राजधानी स्थापन नहीं करता। उनके अंदर संस्कार ही नहीं हैं राजधानी स्थापन करने के। किनके अंदर? धर्मपिताओं (के अंदर)। वो डायरेक्ट बाप से आकरके राजाई की पढ़ाई पढ़ते हैं क्या? नहीं पढ़ते। कौन पढ़ता है? राजाई की पढ़ाई सबसे जास्ती कौन पढ़ता है? राम बाप। तो वो ही राम बाप जो है, वो जिस्मानी बाप है या रूहानी बाप है? जिस्मानी बाप है। तो जो जिस्मानी राजाईयाँ हुई हैं उनका फाऊन्डेशन डालने के लिए वो बाप निमित्त बनता है।

The physical world begins only from the Copper Age. All the kingships which existed in all the religions from the Copper Age; were there kingships in every religion or not? (Someone said: there were.)Who is the father to lay the seed for all the kingships that existed (in those religions)? I establish your capital (*rajdhani*). Is the speaker one two? He is one. He establishes kingship for 21 births. And the other one is the father of the human world. This is why the religious father of every religion who comes does not establish the capital. They do not at all have the sanskars of establishing the capital. In whom? In the religious fathers. Do they come and study the knowledge of kingship directly from the Father? They do not (study directly). Who studies? Who studies the knowledge of kingship the most? The father Ram. So, is that father Ram a physical father or a spiritual father? He is a physical father. So, that father becomes an instrument in laying the foundation for all the physical kingships that existed.

जो भी धर्म शुरू होगा, पहले धर्म की स्थापना होती है, 300-400 वर्ष तक उनकी जनसंख्या बढ़ती रहती है। कोई राजाई स्थापन नहीं होती है। फिर जब टाईम आता है तो वो ही बीज बाप जिसको कहा जाता है बापदादा। क्या? चाहे बौद्धी धर्म हो या कोई भी धर्म हो। मान लो! बौद्धी धर्म है। तो महात्मा बुद्ध की आत्मा ऊपर से आती है बौद्ध धर्म स्थापना करती है।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

किसके द्वारा? सिद्धार्थ के द्वारा। तो सिद्धार्थ हो गया आधारमूर्त। अम्मा। क्या हो गई? बौद्ध धर्म की माँ। फिर उसका बाप कौन? जो सिद्धार्थ का बाप है वो शुद्धोधन है। वो हो गया बाप। उसको जन्म किसने दिया? शुद्धोधन ने। और फिर शुद्धोधन का बाप कौन? डाडे कौन डाडे? बिंबिसार। तो बच्चों को आज जो भक्तिमार्ग में अनेक जन्म-जन्मांतर जो वर्सा मिलता रहा, वो बाप का वर्सा मिलता है या डाडे का वर्सा मिलता है? कोई भी बच्चा परिवार में पैदा हो, बाप उसे अपना वारिस बनाए या न बनाए, फारकती दे दे, कुछ भी न दे। लेकिन डाडे का वर्सा देना पड़ेगा।

Whichever religion starts; first a religion is established; then its population increases for 300-400 years; no kingship is established. Then, when the time comes, the same seed father, who is called Bapdada. What? Whether it is Buddhism or any other religion…; suppose it is Buddhism; so the soul of Mahatma Buddha comes from above and establishes Buddhism. Through whom? Through Siddharth. So, Siddharth is the root-form (*adhaarmurt*). The mother. What is it? The mother of Buddhism. Then who is its father? Siddharth's father is Shuddhodhan. He is the father; who gave birth to him? Shuddhodhan. And then who is Shuddhodhan's father? Who's the grandfather, the grandfather? Bimbisar. So, the inheritance that the children have been receiving for many births now in the path of bhakti, do they receive the inheritance from the father or from the grandfather? If a child takes birth in a family, a father may or may not make him his inheritor, he may divorce him; he may not give him anything. But he will have to be given the grandfather's inheritance.

तो मनुष्य सृष्टि में ये भी फाऊन्डेशन अभी पड़ रहा है। क्या? ये फाऊन्डेशन पड़ गया। जन्म-जन्मांतर ये फाऊन्डेशन पड़ता आया है कि हर धर्म में जब जनसंख्या बढ़ जाती है तो वो राम वाली आत्मा अपना ग्रुप लेकरके वहाँ जाकरके जन्म लेती है, उस धर्म में। जैसे, कोई कहे क्यों जन्म लेती है? ये तो बनी बनाई बात है। नहीं। जैसे सिद्धार्थ था। शुद्धोधन राजा ने सिद्धार्थ को देश निकाला दे दिया। दिया ना? हिस्ट्री में है ना। आखिर बाप है। धर्म पर पक्का था, अपना धर्म नहीं छोड़ा। धरत परिए पर धर्म न छोड़ीए। धर्म नहीं छोड़ा भले बच्चा छूट गया। लेकिन बच्चे ने बहुत बड़ा काम करके दिखाया देश-विदेश में। हजारों की हजार पब्लिक बौद्ध धर्म में कनवर्ट कर ली। तो वो शोहरत तो बाप के पास आती है ना। बाप का भी जो बाप है डाडा, वो भी तो पहले जिंदा होता था। पहले छोटी उमर थोड़े ही होती थी। डाडे भी जिंदा होता था। तो दादा भी खुश होगा कि देखो मेरे खून से पैदा हुआ बच्चा कितना पॉवरफुल आत्मा निकली।

So, this foundation is also being laid in the human world now. What? This foundation has been laid. This foundation is being laid for many births, that when the population increases in every religion, the soul of Ram takes its group along and is born in that religion. For example…; someone may ask, why is it born (in that religion)? It is indeed predetermined. No. For example, there was Siddharth. King Shuddhodhan banished Siddharth (from his kingdom). He banished him, didn't he? It is mentioned in the history, isn't it? After all he is the father. He was firm in his religion; he did not leave his religion. It is better to fall dead on

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

the ground rather than to leave our religion. He did not leave his religion, even if it meant leaving his child. But the child performed a very great task in the country and abroad. He converted thousands of public to Buddhism. So, that fame reaches the father, doesn't it? The father's father, i.e. the grandfather also used to be alive in those times. Earlier the lifespan used to not be short. The grandfathers also, used to be alive. So, the grandfather would also feel happy (thinking): look, the child born from my blood turned out to be such a powerful soul!

डाडे भी खुश होता है और बाप भी अंदर-2 खुश होता है लेकिन धर्म से बंधे हुए हैं। इसीलिए धर्म को त्याग नहीं सकते। उनके अंदर ये संस्कार हैं, संगमयुग के, उन संस्कारों के आधार पर भल बच्चे को कोई सहयोग नहीं देते हैं लेकिन उनका दिल तो उस तरफ जाता है या नहीं जाता है? जाता है। तो जो दिल जाता है ना... धर्म खींचता है, अरे! अधर्मी बच्चा है और दिल जाता है। दिमाग कहता है ये अधर्मी बच्चा है और दिल कहता है - ये मेरा बच्चा है, मेरा खून है। तो भले धीमी गति से वो बच्चे की तरफ आत्मा झुकती है। जो संकल्प हम तीव्ररूप से करते हैं और जितने ही ज्यादा तीव्ररूप से करते हैं, वो इस जन्म में भी सफल हो सकते हैं और अगले जन्म में भी सफल हो जाते हैं। अगर धीमी गति से कोई संकल्प लगातार किए जायेंगे तो कई जन्मों के बाद उनका फल मिलता है।

The grandfather feels happy as well as the father feels happy inside, but he is bound by the religion. This is why he cannot renounce the religion. There are sanskars in them from the Confluence Age and on the basis of those sanskars, although they do not give any help to the child, does their heart reach out to him or not? It does. So, when the heart reaches out (to the child)…; the religion pulls [him back]: Arey! He is an irreligious child. And the heart reaches out to him! The intellect says: this child is irreligious, and the heart says: he is my child, my blood. So, although gradually, that soul inclines towards the child. The thoughts that we create forcefully and the greater the force of creating it, they can succeed in this birth itself. And they can succeed in the next birth also. If some thoughts are created gradually and continuously, their fruits are received after many births.

ये संकल्पों का बीज है। क्या? जैसे कोई फसल बोई जाती है ना। आदि में ही कोई बीज बो दे। तो उसका फल जल्दी निकलता है अच्छा निकलता है। और मौसम जब निकलने को हो जाए, फिर कोई बीज बोता है तो उसका फल उतना अच्छा नहीं आता। तो ऐसे ही जो बीज बोया बच्चे की तरफ बुद्धि ढुरने का, दिल ढुरने का। दिल ढुलक गया ना। तो वो धीमी-2 गति से दिल रोकते हुए भी नहीं रूकता, दिल जाता है। दिल को रोक नहीं सकता कोई। तो वो 200-400 वर्ष के बाद जब उस धर्म की बहुत पैदाईश हो जाती है, बहुत जनसंख्या बढ़ जाती है। तो वो आत्मा वहाँ जाकर जन्म लेगी। और वो इतनी पावरफुल आत्मा है जिसमें राजाई के संस्कार भरे हुए हैं। असल सूर्यवंशी आत्मायें हैं ना। तो वहाँ जाकरके चाहे बाबर बनकरके राजाई स्थापन करें...। लेकिन मुगल सल्तनत स्थापन करती है तीव्र पुरूषार्थ के आधार पर।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

This is a seed of thoughts. What? For example, a crop is sowed. Someone may sow the seed in the beginning (of the sowing season) itself, then it gives quick fruit and good fruit. And if someone sows the seed when the season is about to end, then its fruit will not be so good. So, similarly, the seed that was sowed, of being inclined towards the child, of the heart becoming inclined to him… the heart reached out to him, didn't it? So, despite stopping [the heart], the heart does not stop, gradually it reaches out (to the child). Nobody can stop the heart (from reaching out to someone). So, after 200-400 years, when the population of that religion increases a lot, when the population increases a lot, then that soul will go there and be born there. And it is such a powerful soul that has the *sanskars* of kingship within it. They are true *Suryavanshi* souls, aren't they? So, he may go there and establish kingship by becoming Babar (the founder of Mughal dynasty)… But he establishes Mughal dynasty on the basis of fast purusharth (spiritual effort).

ये तीव्र पुरूषार्थ के संस्कार इस संगमयुग में ही ब्रह्मा बाप में देखे जाते हैं। और वहाँ भी वो तीव्र पुरूषार्थ के संस्कार देखने में आवेंगे कि एक जन्म का आदि में जो सिपाही था, वो उसी जन्म में सिपाही से सम्राट बन जाता है। और कोई धर्म वालों में और उनके फॉलोवर में इतनी पुरूषार्थ की रफ्तार नहीं होती। जो एक ही जन्म में सिपाही से सम्राट बन जावे। ऐसे ही हर धर्म की भी बात है।

The sanskars of making fast purusharth are seen in the Brahma, [and] the father in this Confluence Age itself. And even there, those sanskars of fast purusharth will be visible that the one who was just a soldier in the beginning of the birth, becomes an emperor in the same birth. Such pace of purusharth is not observed in the people of other religions and their followers that someone (among them) may transform from a soldier to an emperor in the same birth. Similar is the case with every religion.

जिज्ञासु- नहीं वो ताजमहल को कब्रिस्तान कर दिया ना।

बाबा- अरे ताज महल नहीं था। उस समय उसका नाम भी ताज महल नहीं था। वो तो शिव का मंदिर था। बाद में शाहजहां जो था, वो शाहजहां ने जन्म लिया ना। शाहजहां कौनसी आत्मा है? जो बाबर वाली आत्मा है जब बीजरोपण करेगी तो फसल काटेगी नहीं? मुगल सल्तनत का सबसे ऊँची स्टेज की राजाई कौनसी थी? कौनसे राजा की थी?

जिज्ञासु- बाबर।

Student: No, he transformed Tajmahal into a cemetery, didn't he?

Baba: Arey it was not Taj Mahal. At that time its name was not Taj Mahal either. It was a temple of Shiv. Later on Shah Jahan was born there. Which soul becomes Shah Jahan? When the soul of Babar will sow the seed, will it not reap the crop? What was the highest stage of the Mughal Sultanate? Of which king?

Student: Babar**.**

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

बाबा- नहीं बाबर ने तो बीज बोया मुगल सल्तनत का। सिपाही से सम्राट बना। और मुगल राज्य शुरू हुआ। लेकिन चढ़ती कला का आखरी स्टेज वाला राज्य कौन सा था मुगलों का? शाहजहाँ। आगरे का किला बनाया, फतेहपुर सीकरी बनाया। दिल्ली का किला बनाया। और बहुत अच्छा शासनकाल रहा। तो बीज भी वो बोता है, मध्य में भी वो ऊँची स्टेज में है। और लास्ट में गिरने की कला जब आती है तो गिराने के निमित्त भी वही बनता है।

जिज्ञासु- उसकी संगमयुग में शूटिंग कैसे होती है कि तेजोमहल को शाहजहां ने कब्रिस्तान बना दिया।

Baba: No, Babar only sowed the seed of Mughal Sultanate. He changed from a soldier to an emperor and the Mughal rule began. But among the Mughals, which kingdom was the last one in the stage of ascent? [It was of] Shah Jahan. He built the Agra fort, he built the Fatehpur Sikri. He built the fort of Delhi. And his reign was very good. So, he sows the seed and also in the middle, he is in a high stage. And when the descending stage comes in the last period, then it is he who becomes an instrument in causing downfall.

Student: How does its shooting take place in the Confluence Age that Shah Jahan transformed the Tejo Mahal into a graveyard?

बाबा- दिल्ली कब्रिस्तान बनती है या नहीं बनती है? बनती है। पहले पुरानी दिल्ली कब्रिस्तान बनेगी। या नई दिल्ली कब्रिस्तान बनेगी? पुरानी दिल्ली बनती है। पुरानी दिल्ली में पार्ट किसका है ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनियाँ में एडवांस में? कौन है पुरानी दिल्ली?

जिज्ञासु- जगदम्बा।

बाबा- एडवांस पार्टी जब शुरू हुई तो फाऊन्डेशन पुरानी दिल्ली से पड़ना शुरू हुआ या नई दिल्ली से पड़ना शुरू हुआ? कौन है पुरानी दिल्ली?

जिज्ञासु- बेहद की यमुना।

Baba: Does Delhi become a graveyard or not? It becomes. Will the old Delhi become a graveyard first or will the New Delhi become a graveyard? The old Delhi becomes (a graveyard first). Who plays the part of old Delhi in the Confluence Age world of Brahmins in the advance (party). Who is the old Delhi?

Student: Jagdamba.

Baba: Huh! When the Advance Party started, did the foundation begin to be laid from the old Delhi or from the New Delhi? Who is old Delhi?

Student: Yamuna in the unlimited.

बाबा- हाँ। जो यमुना नदी है वो ही पुरानी नदी है, वो ही पुरानी दिल्ली है। नई दिल्ली तो लाल पत्थरों की बनी हुई है। रजो प्रधान है। और पुरानी दिल्ली जा मा मिस जिद। हे मिस, जिद करने वाली मिस, तू जा। जा, गटर में गिर जाके। तो कब्रस्तान बनेगी या परिस्तान बनेगी? परिस्तान में ऊँची स्टेज होती है या कब्रिस्तान में ऊँची स्टेज होती है? परिस्तान में ऊँची स्टेज होती है, उड़ती हुई स्टेज। कब्रिस्तान में तो जमीन में दबी हुई स्टेज होती है,

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

देहअभिमान की मिट्टी में। जहाँ से कृष्ण का जन्म हुआ। कृष्ण का जन्म जेल में हुआ, पांच विकारों की जेल में हुआ या बाहर हुआ? जेल में हुआ।

Baba: Yes. The river Yamuna is the old river, she is the old Delhi. New Delhi is made up of red stones. It is *rajopradhan*. And the old Delhi – Ja ma mis jid. O Miss, O Miss who shows obstinacy (*jid*), go [away]. Go, fall into a gutter. So, will she become a graveyard or an abode of angels? Is the stage higher in the abode of angels or in the graveyard? The stage is higher in the abode of angels. A flying stage. In the graveyard, it is a stage of being buried in the land, in the soil of body consciousness; where Krishna was born. Was Krishna born in a jail, in the jail of five vices or was he born outside? [He was born] in the jail.

समय:42.50-46.24

जिज्ञासु- बाबा, संगमयुग में श्रेष्ठ आत्माओं के जो-2 पार्ट डिक्लैर होते हैं। तो डिक्लैर होने के बाद उनकी डाऊन स्टेज में आने की सम्भावना होती है क्या?

बाबा- पार्ट डिक्लैर होने से कोई पक्का नहीं हो जाता एकदम। जैसे कोई आई.सी.एस पास कर ले। आई.ए.एस पास कर ले। इन्डियन एडमिनिस्ट्रेटिव सर्विस में पास हो जाए, ट्रेनिंग भी पूरी कर ले। तो क्या उसको सीट मिल जाती है उसी समय? नहीं मिलती ना। तो ऐसे ही डिक्लैर हो गया रिज़ल्ट। क्या? अब जब तक सीट पर सेट होकर न दिखाए तब तक बात नहीं मानी जाएगी। देखने वालों को देखने में आए कि ये सीट पर सेट है। तभी माना जाएगा तब तक प्रैक्टिकल परीक्षा देनी पड़े। थ्योरिटिकल परीक्षा हो जाती है पहले, बाद में, प्रैक्टिकल परीक्षा भी होती है। नहीं तो सन् 76 में बाप का प्रत्यक्षता वर्ष हो गया। कहें कि नारायण बन गया, विश्व का बादशाह बन गया? फिर? तो जैसे पहले मणके के लिए वैसे बाकी आठ मणकों के लिए भी।

Time: 42.50-46.24

Student: Baba, is there a possibility of the stage of the righteous souls, whose parts have been declared, going down in the Confluence Age?

Baba: Someone does not become firm just by the declaration of his part. For example, someone may pass ICS, IAS. He may pass in the Indian Administrative Service; he may complete the training as well; so, does he get the seat immediately? He doesn't, does he? So, similarly, the result has been declared. What? Well, until he becomes set on the seat, the declaration will not be accepted. The observers should be able to see that this person has become set on his seat. Only then will it be accepted; till then he has to give a practical exam. First the theoretical exam is conducted; later on the practical test is also conducted. Otherwise, the year of revelation of the Father was celebrated in (19)76. Can we say that he became Narayan, or that he became the emperor of the world? Then? So, as in the case of the first bead, so is the case with the remaining eight beads.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

जिज्ञासु- उसके डाऊन स्टेज में आने की सम्भावना तो सुप्रीम सोल की प्रवेशता के कारण ना के बराबर होती है ना। तो उसको छोड़ करके दूसरी आत्माओं को...

बाबा- दूसरी आत्मायें शूटिंग पीरियड में... जो शूटिंग पीरियड चल रहा है इस शूटिंग पीरियड में शूटिंग होगी या नहीं होगी?

जिज्ञासु- होगी।

Student: The possibility of his stage coming down is negligible due to the entry of the Supreme Soul, isn't it? So, except him all the other souls....
Baba: In the shooting period, the other souls…the shooting period that is going on; in this shooting period, will the shooting take place or not?
Student: It will take place.

बाबा- हाँ तो जिन आत्माओं ने 84 जन्म सहयोग देने का पार्ट बजाया होगा वो यहाँ भी लम्बे समय तक सहयोग देंगी या नहीं देंगी? (किसी ने कहा- देंगी जरूर) और जिन आत्माओं ने, ब्राह्मण आत्माओं ने ही, द्वापर के आदि में ही कनवर्ट होकरके इस्लाम धर्म में चले गए। मान लो! इब्राहिम आया, कोई ब्राह्मण में ही प्रवेश करेगा। अरे! ब्राह्मण देवता में ही प्रवेश करेगा। तो जिसमें प्रवेश किया पहले-2 उसने बंटाढार कर दिया, कनवर्ट हो गया दूसरे धर्म में। तो बाप का सहयोगी बना या विरोधी बना?

जिज्ञासु- विरोधी।

Baba: Yes, so, will the souls who would have played the part of giving help for 84 births help for a long duration here as well or not? And the souls, the Brahmin souls, which went to Islam after being converted in the beginning of the Copper Age itself… suppose, Abraham came; he will enter a Brahmin (soul) only. Arey! He will enter a Brahmin deity only. So, the one in whom he entered first of all ruined everything and converted to another religion. So, did he become the Father's helper or an opponent?
Student: An opponent.

बाबा- विरोधी बन गया ना। वो तो द्वापर युग के आदि से ही विरोधी बन गया। और अष्टदेव आदि से लेकर अंत तक सहयोगी बनने का पार्ट बजाते हैं। लेकिन माया किसीको छोड़ती नहीं है। माया बड़ी जबरजस्त है। उन अष्टदेवों को भी आखरी जन्म में, कनवर्ट कर लेती है। गिरा देती है नीचे, और वो भी कल्याणकारी है ड्रामा में। क्यों? क्योंकि जो नीचे ही नहीं गिरेगा वो ऊपर कैसे चढ़ेगा? जितना नीचे गिरेगा, उतना ऊपर उठेगा। जितना तमोप्रधान बनेगा, उतना सतोप्रधान बनेगा।

Baba: He became an opponent, didn't he? He became an opponent from the beginning of the Copper Age itself. And the eight deities play the part of helpers from the beginning to the end. But Maya does not leave anyone. Maya is very powerful. She converts even those eight deities in the last birth. She brings their downfall and that also is beneficial in the drama. Why? Because how will the one who does not experience downfall at all, rise? The more he

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

experiences downfall, the more he will rise. The more someone becomes degraded, the more *satopradhan* he will become.

समय: 54.30-56.05

जिज्ञासु- बाबा, एक वार्तालाप में बोला है बाबा ब्रह्मा की सोल हनुमान का पार्ट बजाती है संगमयुग में। तो वो सूर्य को हप्प कर लेती है। ज्ञान सूर्य शिवबाबा को माना बाप को गुप्त रखने का पार्ट बजाती है, लम्बे समय तक। तो इस बात का बहुत बड़ा पापों का बोझा उसपर चढ़ता है कि नहीं?

बाबा- चढ़ा है तब ही तो ये इतना पाप हो गया कि माँ का पति बनकरके बैठ गया 2500 साल।

Time: 54.30-56.05

Student: Baba, it was said in a discussion (CD) that the soul of Brahma Baba plays the part of Hanuman in the Confluence Age. So, he gobbles the Sun[6] (as per the Hindu mythology). He plays the part of keeping the Sun of knowledge, Shivbaba, i.e. the Father hidden for a long time. So, does he accumulate a huge burden of sins on account of this or not?

Baba: He has accumulated it; that is why; he has committed the sin of becoming the mother's husband for 2500 years.

जिज्ञासु- वो आत्मा सज़ा किस तरह से खाएगी फिर इस बात का?

बाबा- अभी जो सूक्ष्म शरीर धारण करती है ये सज़ा नहीं है? ये सूक्ष्म शरीर से भटकना ये सज़ा नहीं होती है? पता है सूक्ष्म शरीर किनको मिलता है? जिन आत्माओं के पाप कर्म बहुत बढ़ जाते हैं उनके पाप ज्यादा न बढ़े इसीलिए उनको सूक्ष्म शरीर मिलता है। जितने भी चंद्रवंशी हैं, इस्लामवंशी हैं, बौद्धिवंशी हैं, क्रिश्चयनवंशी हैं वो सब सूक्ष्म शरीर धारण करने वाले हैं। सिर्फ सूर्यवंशी ऐसे हैं जो बीजरूप स्टेज धारण कर लेते हैं तो उनमें कोई सूक्ष्म शरीर प्रवेश ही नहीं कर सकता। इसीलिए बाप कहते हैं अपन को आत्मा समझो नहीं तो आगे चलके 14-14 आत्मायें प्रवेश कर जायेंगी। और पाप करायेंगी शरीर से। उनके ऊपर पाप नहीं चढ़ेगा। जिस शरीर से पाप होगा ना उस आत्मा को पाप लगेगा। वो पूर्व जन्म का हिसाब-किताब है।

Student: How will that soul suffer the punishments for this?

Baba: He assumes a subtle body now; is it not a punishment? Wandering with a subtle body - is it not a punishment? Do you know who gets a subtle body? The souls which accumulate more sins get a subtle body so that their sins do not increase. All the *Chandravanshis, Islamvanshis, Bauddhivanshis, Christianvanshis*[7] assume a subtle body. Only the *Suryavanshis* are such ones, that they assume a seed-form stage so no subtle body can enter them. This is why the Father says, Consider yourself to be a soul; otherwise, in future, upto 14 souls will enter in you. And they will make you commit sins. They will not accumulate

[6] Hanuman, in his childhood, is shown to gobble up the Sun

[7] belonging to that particular dynasty

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

sins. The soul through whose body the sin has been committed will accumulate the sin. That is the karmic account of the past birth.

समय:56.13-58.25

जिज्ञासु- बाबा, अष्टदेव और अष्टरत्न में क्या फर्क है?

बाबा- रत्न जो होते हैं उनमें नौ रत्न हैं ना। वो एक से एक बेशकीमती हैं, कम कीमत वाले हैं नम्बरवार और ज्यादा कीमत वाले हैं या एक जैसे हैं? नम्बरवार हैं। एक हीरा है, तो कोई माणिक है, तो कोई मूंगा है, तो कोई मोती है, कोई पन्ना है। एक से एक कम कीमत वाले हैं ना। तो जैसे धर्म होते हैं और उनके धर्मपितायें होते हैं। तो वो एक दूसरे से कम कीमत वाले हैं ना। तो वो धर्मपितायें हो गए रत्न। क्या? और उनमें प्रवेश करते हैं। जो प्रवेश करते हैं उनमें से पहला जो रत्न है उसमें हीरा प्रवेश करता है। क्या? पत्थर में क्या प्रवेश करता है? हीरा। उसकी यादगार क्या बनाई गई? सोमनाथ मंदिर। सोमनाथ मंदिर का जो लिंग है, वो पत्थर है, किसकी यादगार? पत्थर बुद्धि की यादगार है और उस पत्थर बुद्धि में कौन प्रवेश किया? हीरा। वो है शिव। बाकी कोई माणिक है, कोई मोती है, कोई पन्ना है, कोई मूंगा है। कोई क्या है।

Time: 56.13-58.25

Student: Baba, what is the difference between the eight deities and the eight gems?

Baba: There are nine gems, aren't there? Is each one of them priceless, are they *number wise* low priced or high priced or are they equal? They are *number wise (*of different value*).* One is a diamond; another is a *maanik* (ruby); another is a *munga* (coral); another is a pearl, another is a *panna* (emerald). Each one is priced less than the other. So, just as there are religions and their religious father... So, their value is in a decreasing order, isn't it? So, those religious fathers are the gems. What? And they (the subtle seed) enter them. Those who enter…; the diamond enters the first gem. What? Who enters in the stone? The diamond. What is its memorial? The Somnath Temple. The *ling* in the Somnath Temple is a stone; whose memorial is it? It is the memorial of the one with a stone-like intellect. And who entered that [soul with a] stone-like intellect? The diamond. He is Shiv. Among the rest, someone is *maanik*, someone is *moti*, someone is *panna* and someone is *munga*. Someone is something else.

जिज्ञासु- अष्टदेव।

बाबा- हाँ। तो अभी बताया ना कि जिसमें प्रवेश करते हैं। धर्मपितायें जिसमें प्रवेश करते हैं और प्रवेश करने वाले में जिसमें जिसका जो बाप होता है। और उस बाप का भी बाप होता है। उसको कहते हैं पूर्वज। क्या? कैसा ज? ज माना जन्म लेने वाला। कैसा जन्म लेने वाला? सबसे पहले जन्म लेने वाला। असल सनातनी।

Student: The eight deities.

Baba: Yes. So, just now it was said that the one in whom they enter…; the one in whom the religious father enters and [there is also] the father of the one in whom he enters; that father

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

also has a father. He is called the ancestor (*poorvaj*). What? What kind of '*j*'? '*J*' means the one who is born. How is he born? He is born first of all. The true *Sanatani (*ancient*).*

समय: 58.58-01.00.31

जिज्ञासु- बाबा, लौकिक परिवार में माँ, बाप, भाई, बहन जो ज्ञान सुनना नहीं चाहते हैं और बाबा ने बोला है कि परिवार का मुखिया ज्ञान में चलेगा उसका सारा परिवार चलेगा। तो वो परिवार टू लेट का बोर्ड लगने से पहले आ जाएगा ज्ञान में।

बाबा- बाबा ने तो बोला है, तुम्हारा पूरा का पूरा परिवार चलेगा ज्ञान में, क्यों? इसीलिए चलेगा कि परिवार के आपके जो भाँती हैं, जानते हैं कि कोई और ज्ञान ले लिया है इसने। फिर भी आपको घर से बाहर तो नहीं निकाल दिया। इतनी घृणा तो नहीं करते हैं कि आपको घर से बाहर निकाल दें। कौरव तो नहीं हैं? कौरव तो नहीं बनें ना। आपको प्यार तो करते हैं। करते हैं ना। आप जो घर में सुनाते हैं तो कान बंद तो नहीं कर लेते, मुसलमान तो नहीं बन जाते? अल्लाह हू अक्बर। सुनते हैं ना। भले! स्वीकार नहीं करते। अभी स्वीकार नहीं करते।

Time: 58.58-01.00.31

Student: Baba, there are parents, siblings in the *lokik* family who do not want to listen to the knowledge and Baba has said that if the head of the family enters the path of knowledge, then the entire family will follow. So, will the family enter the path of knowledge before the too-late board is displayed?

Baba: Baba has said, your entire family will follow the path of knowledge. Why? It is because the members of your family know, this fellow has obtained some other knowledge. Even so they have not thrown you out of the family. They do not hate you to such an extent that they banish you from your home. They are not Kauravas, are they? They haven't become Kauravas, have they? They at least love you. They love you, don't they? When you narrate at home, they do not close their ears; they do not become Muslims, do they? Allah-O-Akbar. They listen, don't they? Although they do not accept, they don't accept now.

जिज्ञासु- टू लेट का बोर्ड लगने के पहले ही स्वीकार करेंगे?

बाबा- हाँ। तो वो आत्मायें जो हमारी बात सुन तो रही है कम से कम। भले स्वीकार नहीं कर रही है और उनके मुकाबले जो बेसिक वाले ब्रह्माकुमार-कुमारी हैं, वो क्या कर रहे हैं? वो सुनते भी नहीं और आपको देखना भी नहीं चाहते है। और अपने घर में, अपने परिवार में रख भी नहीं सकते आपको निकालकरके बाहर कर देते हैं। तो वो ज्ञान में आवेंगे या आपके परिवार में जो लौकिक परिवार में हैं, सुनते भी हैं, आपको निकालके बाहर नहीं किया है, आपसे प्यार भी करते हैं। आपकी अगर कहीं एक्सीडेन्ट हो जाए तो दौड़े-2 आपको उठाकरके भी लायेंगे। और वो उठाके नहीं लायेंगे (कहेंगे) मर गया तो अच्छा हुआ। तो उनको ज्ञान में आना चाहिए कि नहीं आना चाहिए? आना चाहिए ना। इसीलिए बोला कि तुम्हारे परिवार के जो भी हैं भाँती, वो अंत में ज्ञान में आवेंगे लेकिन प्रजा वर्ग में आवेंगे। क्या?

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Student: Will they accept before the too-late board is displayed?
Baba: Yes. So, those souls [are the ones] which are at least listening to us, although they are not accepting (now). And when compared to them, those who follow basic knowledge, i.e. the Brahmakumar-kumaris…. what are they doing? They neither listen nor do they want to see you. And they cannot give you place in their home, in their family either. They throw you out. So, will they come into (the path of advance) knowledge or will those in your family, your lokik family who listen and have not thrown you out, and also love you; if you meet with an accident somewhere, they will come running and take you (to the hospital). And **they** (i.e. the BKs) will not lift you; (they will say) it is good that he died. So, should they (i.e. members of your *lokik* family) enter (the path of) knowledge or not? They should. This is why it has been said that the members of your family will enter (the path of) knowledge in the end, but they will be part of the subjects category. What?

जिज्ञासु- टू लेट के पहले आयेंगे कि बाद में?
बाबा- अरे! यहाँ राजाई पद पाने का पुरूषार्थ कर रहे हैं। जब रिज़ल्ट निकल गया और रिज़ल्ट निकलने के बाद कोई ज्ञान में आते हैं तो क्या कहेंगे? तो टू लेट का बोर्ड हुआ ना। अभी भी लेट का बोर्ड लगा है लेकिन टू लेट का बोर्ड नहीं लगा है।
Student: Will they come before it's too-late or after that?
Baba: Arey! Here we are making spiritual effort to achieve the post of kingship. When the result has already been declared and after the results have been declared, if someone enters (the path of) knowledge, then what will be said about them? It is [that they have come after] the too-late board is displayed, isn't it? Even now the board of 'late' has been displayed, but the board of 'too-late' has not been displayed.

……
Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info